दैनिक भास्कर
रविवार, 11 अप्रैल 2021 नोएडा

ऑर्गेनिक फार्मिंग : स्वास्थ्यवर्धक फसल क्रान्ति

गीतांजलि सक्सेना

विकल्प / भण्डार

देश का पहला सिक्किम राज्य एक उदाहरण है, जहां पूर्णतः जैविक खेती होती है। पर्यावरण और माटी के अच्छे स्वास्थ्य के लिए जैविक खेती का विस्तार करना समय की जरूरत है।

मेरे देश की धरती सोना उगले, उगले हीरे मोती ... इस लेख को लिखते वक्त फिल्म उपकार की ये दो पंक्तियां याद आ गईं। दरअसल, हमारा देश प्राकृतिक संसाधनों से लबालब भरा हुआ है और यह गीत उसी को दर्शाता है। किन्तु दुख तो इस बात का है कि बदलते वक्त के साथ ही साथ प्रदूषित वातावरण ने इस बेशकीमती लोकप्रिय गीत के मायने ही बदल दिये हैं। देश की मिट्टी की उस सोंधी खुशबू को पीछे छोड़ते हुए हम उसे भूलते जा रहे हैं। धरती से प्राप्त सौगात प्राकृतिक संपदा को अपनी खाद्य आपूर्ति के लिए बेरहमी से इस्तेमाल कर रहे हैं। हम आसानी से उन सब सुरक्षित स्वास्थ्यवर्धक प्रयासों को पूरी तरह अनदेखा कर देते हैं। यहां ध्यान कृषि भूमि संरक्षण और उसके स्वास्थ्य की देखभाल की ओर किए जाने वाले प्रयासों से है।

हम कैसे भूल सकते हैं कि भारत हर परिस्थिति में, किसी भी क्षेत्र में हो ... आशा व संभावनाओं से भरा रहता है। कोविड के चलते भी देश का बाजार बहुत सारे देशों के लिए गर्म इसलिए भी रहा, क्योंकि देश में विकल्पों का भण्डार है। बस बदलाव लाने के लिए मानसिक रूप से प्रतिबद्ध होना जरूरी है। तभी पर्यावरण संरक्षण के सृजन के लिए हर संभव कोशिश करने में मेहनत कर पाएंगे। मनुष्यों को प्रकृति का वरदान है। उसे संवारना और संजोने का प्रयास करने का दायित्व हर एक पर है।

कई महीनों से देश के अन्नदाता यानी किसानों को अपनी मांग को लेकर सड़कों पर रहते देख कर तकलीफ होती है। समस्या के समाधान का हल व आपस के गतिरोध को न टूटते हुए देख कर हैरानी होती है। ऐसे में पहल करना भूमि रक्षकों की ओर इशारा करता है। कृषि के तरीकों में नए विकल्पों और उसके मापदंडों को समझना और अपनाना ही समय के साथ चलने की सीख और अंतर्मन को जगाता है। समय के साथ परिवर्तन उस क्षेत्र में किए गये प्रयासों की गति को शक्ति देता है। सच तो ये ही है कि लकीर का फकीर बने रहना किसी भी समस्या के समाधान का हल खोजने में बाधक हो जाता है। इसीलिए जरूरी है कि अपनी मानसिकता में सकारात्मक नजरिया व रवैये में बदलाव लाना ही सही कदम रहेगा।

आज के आधुनिक युग में पुरानी तकनीक और पारंपरिक खेतीबाड़ी के तरीके और वातावरण (मौसम) की परिस्थितियां भी फसलों की पैदावार के लिए कम अनुकूल होती जा रही हैं। पर्यावरण प्रदूषण के बढ़ रहे दायरे में फसलों के उत्पादन में इस्तेमाल रासायनिक पदार्थों का भी योगदान रहा है। पोषण के नाम पर खतरनाक केमिकलों का दुष्प्रभाव इंसानों के स्वास्थ्य के लिए घातक सिद्ध हो रहा है और हम बीमारियों को दावत दे रहे हैं। दरअसल, प्रदूषण न केवल मिट्टी के लिए हानिकारक है, बल्कि पर्यावरण को नुकसान भी पहुंचा रहा है।

इन सभी कारणों को ध्यान में रखते हुए उन्हें रोकने के लिए यदि किसान रासायनिक तरीकों की जगह कृषि क्षेत्र में उपज उत्पादों में जैविक तरीकों पर और अधिक जोर दे कर उपयोग करे, तभी इन उत्पन्न समस्याओं पर काफी हद तक काबू पाने में मदद मिल सकती है। जैविक खेती (आर्गेनिक फार्मिंग) पद्धति के माध्यम से फसलों के उत्पादन में रसायन और कीटनाशकों के अप्रयोग से फसलों को प्राकृतिक प्रतिकूल वातावरण और मृदा (मिट्टी) एवं पर्यावरण प्रदूषण पर नियंत्रण करने में मदद मिलेगी। यही नहीं, जैविक सामग्री से बनी खाद न केवल खेतों की मिट्टी में गुणवत्ता में सुधार और उसकी उर्वरक शक्ति को नष्ट होने से बचाता है, बल्कि सच तो ये ही है कि रिसाइकलिंग द्वारा फसलों के पोषक तत्वों को उपलब्ध कराने में सहायता भी कराता है। इस पद्धति में फसलों को अधिक स्वस्थ उपज के अलावा पशुओं को प्राकृतिक वातावरण में उनके जीवन को सुरक्षित रखने पर खास ध्यान दिया जाता है। जैविक खेती अपनाने से किसानों को फसल में कम लागत लगानी पड़ती है और भूमि की उपजाऊ क्षमता बढ़ने के साथ सिचाई के अंतराल में वृद्धि हो जाने से मौसम के बदलते मिजाज (वर्षा) पर कम निर्भर रहना पड़ता है। खेती में जैविक पद्धति पर्यावरण को अनुकूल व संरक्षित करने में समर्थ है। जैविक खेती द्वारा उत्पादित पदार्थों की मांग आज के समय में देश में दिनों दिन बढ़ती जा रही है। देश का बहुत बड़ा तबका जैविक खेती करने के तरीकों की जानकारी रखता है। इस ओर सबकी जागरूकता भी बढ़ी है। जैविक फार्म की फल सब्जियां फायदेमंद व स्वास्थ्यवर्धक हैं। इस कारण शॉपिंग कार्ट का हिस्सा हैं।

अंतर्राष्ट्रीय बाजार में तो आर्गेनिक फूड का प्रचलन काफी समय से चल रहा है। जैविक खाद्य पदार्थ अपने उत्कृष्ट पौष्टिक गुणों के कारण बाजारों में बहुत लोकप्रिय है। स्वस्थ रहने के लिए लोग अब तेजी से जैविक चीजों को अपनी जीवनशैली में अपनाने की कोशिश कर रहे हैं। सीमित उपलब्धता के कारण अभी इन वस्तुओं की कीमतें एक साधारण आदमी की जेब पर अवश्य भारी हैं। लेकिन आज जैविकी उत्पादों की मांग को देखते यह कहना गलत नहीं होगा कि आने वाले दिनों में शहरी क्षेत्रों में जैविक उत्पादों की अधिक बिक्री की प्रबल संभावना है। यही नहीं, विदेशी बाजारों में इन उत्पादों का निर्यात बढ़ाकर किसानों को आय बढ़ाने का एक प्लेटफार्म तैयार करके मार्केटिंग की व्यवस्था करना बेहद सरल है।

सोने पर सुहागा ... जब देशों की सरकार जैविक खेती को बढ़ावा देने और कृषि उत्पादन में रसायनों पर निर्भरता कम करने लिए हर संभव कोशिश कर रही है, तो ऐसे में किसानों को पारंपरिक कृषि के साथ जैविक खेती के लाभ और इसकी प्रणाली की जानकारी लेकर जैविक खेती को भविष्य में आने वाली एक जरूरत के रूप में देखना चाहिए। जिससे न केवल फसलों की उत्पादन क्षमता बढ़ती है, बल्कि विश्व में खाद्य पदार्थों की आपूर्ति की समस्या का समाधान भी बनेगा। केवल ये ही नहीं, देश के किसानों का भौतिकी स्तर भी सुधरेगा। यहां उल्लेखनीय है कि देश का पहला सिक्किम राज्य एक उदाहरण है, जहां पूर्णतः जैविक खेती होती है। पर्यावरण और माटी के अच्छे स्वास्थ्य के लिए जैविक खेती का विस्तार करना समय की जरूरत है।

मिट्टी है अनमोल, देश की है, आन-बान व शान,
प्राकृतिक स्रोतों है भरी देश संपदा, भाग्यशाली है देशवासी,
काया सुख है परम, विश्व स्वास्थ्य दिवस को समर्पित।